राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

स्कूल स्तर गायन एवं स्वर वाद्य पाठ्यक्रम अंक विभाजन

MARKING SCHEME OF SCHOOL LEVEL

सत्र 2026–27

नियमित / स्वाध्यायी प्रथम वर्ष

Praveshika Certificate in Performing Arts- (P.C.P.A.)

(Hindustani Classical Music) Vocal/Instrumental

Previous

PAPER	SUBJECT VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	PRACTICAL- I Choice Raga Demonstration & viva	100	33
2	PRACTICAL - II National Song & Patriotic Song etc.	100	33
	GRAND TOTAL	200	66

सत्र 2027–28

नियमित / स्वाध्यायी अंतिम वर्ष

Praveshika Certificate in Performing Arts- (P.C.P.A.)

(Hindustani Classical Music) Vocal/Instrumental

Final

PAPER	SUBJECT VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	Theory Basic Music - Theory	100	33
2	PRACTICAL Choice Raga Demonstration & Viva	100	33
	GRAND TOTAL	200	66

Dr. Singh Anamika Dixit

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

स्कूल स्तर गायन एवं स्वर वाद्य पाठ्यक्रम

सत्र 2026–27 गायन/स्वरवाद्य प्रथम वर्ष नियमित/स्वाध्यायी

Praveshika Certificate in Performing Arts- (P.C.P.A.)

(Hindustani Classical Music) Vocal/Instrumental

Previous

प्रथम वर्ष गायन/स्वरवाद्य प्रायोगिक : 1 प्रदर्शन एवं मौखिक

पूर्णांक : 100
उत्तीर्णांक : 33

1. संगीत की परिभाषा व सामान्य परिचय।
2. स्वर (शुद्ध, विकृत), सप्तक (मंद्र, मध्य, तार), थाट, वर्ण, अलंकार (पल्टा), आरोह–अवरोह, पकड व राग की परिभाषाऐं।
3. यमन, भैरव व भूपाली रागों के थाट, जाति, शुद्ध विकृत स्वर, वादी–संवादी एवं गायन समय की जानकारी।
4. सरल अलंकारों का ज्ञान।
5. त्रिताल, कहरवा और दादरा तालों का परिचय एवं ज्ञान।
6. भातखण्डे स्वरलिपि एवं ताल चिन्हों का ज्ञान।
7. अपने वाद्य का साधारण ज्ञान।
8. बिलावल, भैरव व कल्याण थाट में दस–दस अलंकारों का गायन।
9. यमन, भैरव और बिलावल रागों मे स्वरमालिका, लक्षणगीत, मध्य लय ख्याल का गायन।
10. अपने वाद्य पर इन रागों में मध्य लय की रचना/गत का (स्थायी, अंतरा सहित) वादन।
11. सितार में प्रारभिक बोल का अभ्यास।

Dr. Singh Anamika Dixit

Praveshika Certificate in Performing Arts- (P.C.P.A.)

(Hindustani Classical Music) Vocal/Instrumental

Previous

प्रायोगिक 2 प्रदर्शन एवं मौखिक

पूर्णांक : 100
उत्तीर्णांक : 33

राष्ट्रगीत, राष्ट्र गान, वन्दे मातरम तथा कोई राष्ट्रीय गीत प्रार्थना, वंदना आदि का गायन अथवा वाद्य के विद्यार्थियों के लिए अपने वाद्य पर वादन अथवा धुन।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1 से 3 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 1 एवं 2 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. संगीत शास्त्र – श्री एम. बी. मराठे
7. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – पं. श्री रामाश्रय झा

Praveshika Certificate in Performing Arts- (P.C.P.A.)

(Hindustani Classical Music) Vocal/Instrumental

Final

सत्र 2027–28 नियमित / स्वाध्यायी अंतिम वर्ष

गायन / स्वरवाद्य

संगीत शास्त्र

समय 3 घण्टे

पूर्णांक : 100

उत्तीर्णांक : 33

1. संगीत शब्द की व्याख्या एवं स्पष्टीकरण, संगीत की पद्धतियाँ (उत्तर भारतीय एवं कनार्टक) की जानकारी। संगीत के प्रकारों (शास्त्रीय, भाव, चित्रपट एवं लोक संगीत आदि) का परिचय।
2. हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के दस थाटों के नाम एवं उनके स्वरों की जानकारी ।
3. थाट और राग का तुलनात्मक अध्ययन। आश्रय रागों की संक्षिप्त जानकारी।
4. निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय विवरण– राग यमन, भैरव, भूपाली, खमाज, काफी।
5. लय (विलम्बित, मध्य, द्रुत,) मात्रा, विभाग, खाली,, भरी, सम एवं आवर्तन की जानकारी।
6. त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा और झपताल तालों का शास्त्रीय परिचय एवं उनका तालिपि में लेखन। (दुगुन के साथ)
7. पं. भातखण्डे जी की स्वरलिपि पद्धति का सामान्य ज्ञान।
8. अपने वाद्य का संक्षिप्त परिचय एवं उसके विभिन्न अवयवों की जानकारी।
9. सितार में प्रारभिक बोल का अभ्यास।

Dr. Singh Anamika Dixit

Praveshika Certificate in Performing Arts- (P.C.P.A.)

(Hindustani Classical Music) Vocal/Instrumental)

Final

गायन/स्वरवाद्यः– नियमित/स्वाध्यायी

अंतिम वर्ष सत्र 2027–28

प्रायोगिक : 1 प्रदर्शन एवं मौखिक (Viva Voce)

समय – 20 मिनिट

पूर्णांक : 100
उत्तीर्णांक : 33

पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।

1. कल्याण, भैरव, खमाज एवं काफी थाटों में दस–दस अलंकारों का गायन एव वादन।
2. पाठ्यक्रम के राग– यमन, भैरव, खमाज, काफी एवं भूपाली।
3. पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका, लक्षण गीत। (गायन के विद्यार्थियों के लिये)
4. पाठ्यक्रम के एक राग में विलम्बित रचना। (ख्याल का गायन अथवा मसीतखानी गत का वादन)
5. पाठ्यक्रम के रागों में मध्यलय की एक रचना (ख्याल गायन अथवा रजाखानी गत का चार–चार तानों/तोड़ों सहित वादन)
6. आकाशवाणी द्वारा मान्य जनगणमन तथा वंदेमातरम् का स्वर लय में गायन/वादन।
7. तीनताल, एकताल, कहरवा, दादरा व झपताल तालों का हाथ से ताली देकर दुगुन सहित प्रदर्शन।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1 से 3 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 1 से 2 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. संगीत शास्त्र – श्री एम. बी. मराठे
7. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – पं. श्री रामाश्रय झा

Dr. Singh Anamika Dixit